Toppersnotes®
Unleash the topper in you

मध्य प्रदेश

वनरक्षक

MADHYA PRADESH PROFESSIONAL EXAMINATION BOARD

भाग – 2

मध्यप्रदेश सामान्य ज्ञान

SIERRA INNOVATIONS

मध्यप्रदेश – वनरक्षक

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	मध्यप्रदेश का सामान्य ज्ञान	
1.	मध्यप्रदेश का गठन	1
2.	राज्य का परिचय	3
3.	भू–वैज्ञानिक संरचना	9
4.	पर्वत एवं पठार	10
5.	नदियॉ एवं नदी घाटी परियोजनाएं	14
6.	जलवायु (तापमान एवं वर्षा)	21
7.	मध्यप्रदेश की मिट्टियॉ	22
8.	मध्यप्रेदश की खनिज संपदा	24
9.	वन एवं वन्य जीव संरक्षण	25
10.	मध्यप्रदेश में कृषि	31
11.	प्रमुख उद्योग	31
12.	परिवहन एवं संचार	35
13.	मध्यप्रदेश में ऊर्जा	40
14.	मध्यप्रदेश मे जनांनकीय	42
15.	मध्यप्रदेश में शिक्षा	46
16.	मध्यप्रेदश में राजनैतिक व्यवस्था	47
	• राज्यपाल, मुख्यमंत्री, विधानसभाध्यक्ष	
	• राज्य मानवाधिकार आयोग, लोकायुक्त एवं उपलोकायुक्त	
	• राज्य वित्त आयोग, राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग	
	• मुख्य सचिव, मध्यप्रदेश का प्रशासनिक ढाँचा	
17.	मध्यप्रदेश का इतिहास	53
	• प्राचीन काल	53
	• मध्य काल	60
	• आधुनिक काल	62

18.	मध्यप्रदेश में पर्यटन	74
19.	मध्यप्रदेश के प्रमुख महल	75
20.	मध्यप्रदेश के साहित्यकार	76
21.	मध्यप्रदेश के संगीतकार	77
22.	मध्यप्रदेश में लोक गायन	78
23.	मध्यप्रदेश का लोक नृत्य	78
24.	मध्यप्रदेश में लोक नाट्य	79
25.	महत्वपूर्ण मंदिर मध्य प्रदेश	81
26.	मध्यप्रदेश की कल्याणकारी योजनाएँ	82
27.	मध्यप्रदेश में खेल	85
28.	मध्य प्रदेश के प्रमुख पुरस्कार	87
	ग्रामीण अर्थव्यवस्था	
29.	मध्य प्रदेश में कृषि	88
30.	मध्यप्रदेश में कृषि पर आधारित उद्योग	97
31.	मध्य प्रदेश में पशुपालन	104
32.	मध्य प्रदेश में पंचायती राज एवं नगरीय प्रशासन	108
33.	मध्य प्रदेश पंचायती राज अधिनियम 1993	110
34.	मध्यप्रदेश में नगरीय संस्थाओं का विकास	113
35.	ग्रामीण अर्थव्यवस्था व पंचायती राज **(PYQ)**	
36.	मध्यप्रदेश की जाति एवं जनजाति	124

मध्यप्रदेश राज्य का गठन

- भारत का हृदय प्रदेश कहा जाने वाला मध्य प्रदेश भारत का एक भू-आवेष्ठित राज्य है । मध्य प्रदेश का वर्तमान स्वरूप, जो आज हमें दिखाई देता है, वह एक लम्बी प्रक्रिया का परिणाम है । ब्रिटिशकाल में मध्यप्रदेश का स्वरूप पूर्णतः पृथक था। स्वतंत्रता पूर्व मध्यप्रदेश वर्तमान स्वरूप में न होकर अलग-अलग प्रांतों तथा रियासतों में विभक्त था । इन रियासतों में सबसे प्रमुख रियासत सेन्ट्रल प्रोविन्स एण्ड बरार थी, जिसकी राजधानी नागपुर थी। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य रियासतें थी, जैसे- पूर्व में बघेलखण्ड, छत्तीसगढ व दण्डकारण्य रियासतें, पश्चिम में मध्य भारत उत्तर में विन्ध्यप्रदेश तथा मध्य में महाकौशल तथा भोपाल की रियासतें।
- स्वतंत्रता के पश्चात् आधुनिक मध्यप्रदेश के निर्माण के क्रम में इसके स्वरूप में कई परिवर्तन किए गए। सर्वप्रथम सेन्ट्रल प्रोविन्स एण्ड बरार, बघेलखण्ड, छत्तीसगढ तथा दण्डकारण्य की रियासतों को मिलाकर 'पार्ट ए स्टेट' बनाया तथा इसकी राजधानी नागपुर रखी गई । मध्य भारत को ' पार्ट बी स्टेट' का दर्जा दिया गया तथा इसकी राजधानी ग्वालियर एवं इन्दौर बनाई गई । इसके अतिरिक्त विन्ध्यप्रान्त को 'पार्ट-सी' का दर्जा देकर इसकी राजधानी रीवा को बनाया गया । भोपाल को एक स्वतंत्र प्रांत बनाकर 'पार्ट-सी' स्टेट के अन्तर्गत ही रखा गया । यह विभाजन भौगोलिक आधार पर किया गया था, न कि भाषागत् या क्षेत्रीय पर ।
- 20 दिसम्बर 1953 ई. में फजल अली की अध्यक्षता में राज्य पुनर्गठन आयोग की स्थापना की गई तथा हृदय नाथ कुजरू एवं के. एस. पणिक्कर इसके सदस्य थे, जिन्होंने अपनी रिपोर्ट 1955 को सौंपी, रिपोर्ट में भारत में 14 राज्य व 6 केन्द्र शासित प्रदेशों के गठन की अनुशंसा की । आयोग की अनुशंसा पर 1 नवम्बर 1956 ई. को भाषायी आधार पर मध्यप्रदेश की गठन की अनुशंसा की । आयोग की अनुशंसा पर मध्यप्रदेश के गठन हेतु निम्नलिखित परिवर्तन किए गए-
    - सर्वप्रथम पार्ट 'ए' स्टेट के 8 जिलों को महाराष्ट्र राज्य को देकर पार्ट ए की शेष 15 रियासतों को मध्य प्रदेश में मिला लिया गया। ये मराठी भाषायी 8 जिले बुल्ढाना, वर्धा, भण्डारा, अमरावती, अकोला, चाँदा, यवतमाला तथा नागपुर थे ।
    - पार्ट 'बी' को कुछ परिवर्तनों के साथ मध्य प्रदेश में मिलाया गया, जिनमें कुल 26 रियासतें थी। इन परिवर्तनों में सर्वप्रथम मन्दसौर जिले की मानपुरा तहसील का सुनेल टप्पा राजस्थान को दिया गया, जबकि कोटा जिले की सिरोंज तहसील को मध्य प्रदेश के विदिशा में मिलाया गया ।
    - पार्ट 'सी' स्टेट को भोपाल रियासत सहित मध्य प्रदेश में मिला लिया गया, जिनमें कुल 38 रियासतें थी ।
    - इस प्रकार पार्ट- ए, पार्ट-बी, पार्ट-सी क्रमशः 15, 26 एवं 38 रियासतों को मिलाकर (कुल 79) मध्य प्रदेश का गठन किया गया ।
- इस सम्पूर्ण प्रक्रिया के पश्चात् 1 नवम्बर, 1956 को मध्य प्रदेश का गठन पूर्ण हुआ तथा इसकी राजधानी भोपाल रखी गई । यहाँ उल्लेखनीय है कि भोपाल तत्कालीन समय में स्वतंत्र जिला न होकर सीहोर जिले की तहसील था । 1 नवम्बर, 1956 ई. को जिस मध्य प्रदेश का निर्माण हुआ, उसमें 8 संभाग और 43 जिले थे । इस नवनिर्मित मध्य प्रदेश के प्रथम राज्यपाल पट्टाभि सीतारमैया को तथा मुख्यमंत्री पं. रविशंकर शुक्ला को बनाया गया ।

मध्य प्रदेश के जिलों का पुनर्गठन

- 1947 में भारत की आजादी के बाद, 26 जनवरी, 1950 के दिन भारतीय गणराज्य के गठन के साथ सैकडों रियासतों का संघ में विलय किया गया था। राज्यों के पुनर्गठन के साथ सीमाओं को तर्कसंगत बनाया गया। 1950 में पूर्व ब्रिटिश केंद्रीय प्रांत और बरार, मकराई के राजसी राज्य और छत्तीसगढ मिलाकर मध्यप्रदेश का निर्माण हुआ तथा नागपुर को राजधानी बनाया गया। सेंट्रल इंडिया एजेंसी द्वारा मध्य भारत, विंध्य प्रदेश और भोपाल जैसे नए राज्यों का गठन किया गया। राज्यों के पुनर्गठन के परिणाम स्वरूप 1956 में, मध्य भारत, विंध्य प्रदेश और भोपाल राज्यों को मध्यप्रदेश में विलीन कर दिया गया, तत्कालीन सी.पी. और बरार कुछ जिलों को महाराष्ट्र में स्थानांतरित कर दिया गया तथा राजस्थान, गुजरात और उत्तर प्रदेश में मामूली समायोजन किए गए। फिर भोपाल राज्य की नई राजधानी बन गया। शुरू में राज्य के 43 जिले थे। इसके बाद, वर्ष 1972 में दो बडे जिलों का बंटवारा किया गया, सीहोर से भोपाल और दुर्ग से राजनांदगांव

अलग किया गया। तब जिलों की कुल संख्या 45 हो गई। वर्ष 1998 में, बडे जिलों से 16 अधिक जिले बनाए गए और जिलों की संख्या 61 बन गई। नवंबर 2000 में, राज्य का दक्षिण-पूर्वी हिस्सा विभाजित कर छत्तीसगढ का नया राज्य बना। इस प्रकार, वर्तमान मध्यप्रदेश राज्य अस्तित्व में आया, जो देश का दूसरा सबसे बडा राज्य है और जो 308 लाख हेक्टेयर भौगोलिक क्षेत्र पर फैला हुआ है।

- सन् 1982 में बी.आर.दुबे की अध्यक्षता में जिला पुनर्गठन आयोग की स्थापना की गई, जिनकी अनुशंसा को पटवा सरकार ने 1989-90 में अनुमोदन प्रदान किया, लेकिन यह लागू नहीं हो सका ।
- दिग्विजय सिंह सरकार ने 25 मई, 1998 को अधिसूचना जारी कर 10 नये जिलां का गठन कर दिया । ये जिले इस तरह बने ।
  1. बडवानी (खरगोन)
  2. श्योपुर (मुरैना)
  3. डिंडोरी- (मण्डला)
  4. कटनी (जबलपुर)
  5. कोरिया (सरगुजा)
  6. जशपुर (रायगढ)
  7. कोरबा (बिलासपुर)
  8. जाँजगीर चाँपा (बिलापुर)
  9. काकेर (बस्तर)
  10. दन्तेवाडा (बस्तर)
- इन दस जिलों के निर्माण के बावजूद क्षेत्रीय विवाद की समस्या का समाधान नहीं हो सका, जिसके कारण सिंहदेव कमेटी का गठन किया गया जिसकी अनुशंसा पर 10 जून, 1998 को 6 और नये जिले गठित किये गये, जो इस प्रकार हैं-
  1. उमरिया शहडोल)
  2. हरदा (होशंगाबाद) — 3 जिले
  3. नीमच (मंदसौर)
  4. महासमुन्द (रायपुर)
  5. धमतरी (रायपुर) — 3 जिले
  6. राजनांदगाँव (कवर्धा)
- इस प्रकार प्रदेश में जिलों की संख्या 61 हो गई ।
- वर्तमान में 52 जिले हैं ।

मध्यप्रदेश के संभाग (Division)

1. भोपाल - भोपाल, रायसेन, राजगढ, सीहोर, विदिशा (5)
2. चम्बल - श्योपुर, मुरैना, भिंड (3)
3. ग्वालियर - ग्वालियर, शिवपुरी, गुना, दतिया, अशोक नगर (5)
4. इन्दौर - अलीराजपुर, बडवानी, बुरहानपुर, धार, इन्दौर, झाबुआ, खण्डवा, खरगोन (8)
5. जबलपुर - जबलपुर, कटनी, नरसिंहपुर, सिवनी, छिन्दवाडा, मंडला, बालाघाट, डिंडोरी (8)
6. नर्मदापुरम - होशंगाबाद, बैतूल, हरदा (3)
7. रीवा - रीवा, सतना, सीधी, सिंगरौली (4)
8. सागर - सागर, छतरपुर, दमोह, टीकमगढ, पन्ना, निवारी (6)
9. शहडोल - शहडोल, उमरिया, अनूपपुर (3)
   उज्जैन - उज्जैन, देवास, आगर-मालवा, शाजापुर, रतलाम, मंदसौर, नीमच (7)

मध्यप्रदेश का विभाजन एवं छत्तीसगढ का गठन

- जुलाई 2000 में भारतीय संसद में छत्तीसगढ गठन विधेयक पारित किया गया, जिसे अगस्त 2000 में मध्यप्रदेश विधानसभा के द्वारा अनुमोदन (स्वीकृति) किया गया और 31 अक्टूबर 2000 को धान का कटोरा कहे जाने वाला छत्तीसगढ अंचल मध्यप्रदेश से पृथक् कर दिया गया 1,35,994 वर्ग किमी. क्षेत्रफल छत्तीसगढ राज्य में चला गया 3 संभाग एवं 16 जिले छ.ग. राज्य में चले गये जिससे प्रदेश में जिलों की संख्या 45 रह गई ।
- तृतीय जिला पुनर्गठन कमेटी (बोस कमेटी) की अनुशंसा पर मध्यप्रदेश में 15 अगस्त 2003 को तीन नये जिले निर्मित किये गये ।
  1. अनूपपुर - शहडोल
  2. अशोकनगर-गुना
  3. बुरहानपुर - खण्डवा
- इस तरह मध्यप्रदेश में कुल जिलों की संख्या 48 हो गयी। 17 मई 2008 को झाबुआ से अलीराजपुर को जिला बनाया गया तथा 24 मई 2008 को सीधी जिले से सिंगरौली को जिला बनाया गया इस तरह कुल जिलों की संख्या 50 हो गयी ।
- 16 अगस्त 2013 को शाजापुर जिले से आगर-मालवा को जिला बनाया गया आगर-मालवा में आगर,

सुरनेर, नलखेडा, बडौद इन चारों तहसीलों को मिलाकर आगर-मालवा को जिला बनाया गया ।

- 01 अक्टूबर 2018 को टीकमगढ जिले से निवाडी को प्रदेश का 52 वाँ जिला बनाया गया जिसमें निवाडी, पृथ्वीपुर एवं ओरछा तहसील शामिल की गई ।

मध्यप्रदेश राज्य का परिचय

- स्थापना :- 1 नवम्बर, 1956
- पुनर्गठनः- 1 नवम्बर, 2000 ई.

मध्य प्रदेश के सीमांत बिन्दु

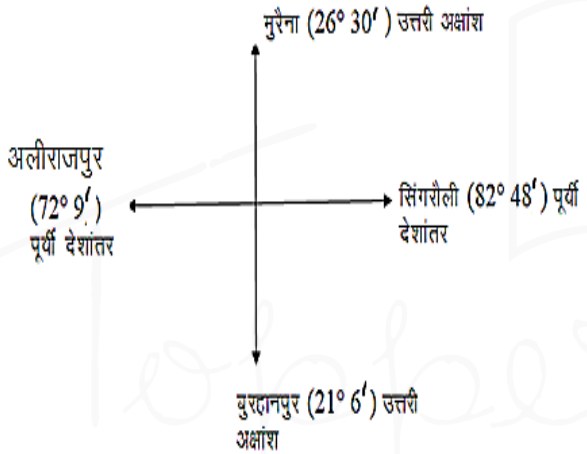

मध्यप्रदेश : सीमावर्ती राज्य एवं जिले

क्र. सं.	सीमावर्ती राज्य	सीमावर्ती जिले (MP)	सीमार्ती जिले (UP)
1	उत्तर प्रदेश (उत्तर में)	सिंगरौली, सागर, गुना, दतिया, शिवपुरी, सीधी, रीवा, सतना, पन्ना, छत्तरपुर, भिण्ड, टीकमगढ, निवाडी (13)	आगरा, ईटावा, झाँसी, बाँदा, ललितपुर, हमीरपुर, इलाहाबाद, मिर्जापुर, सोनभद्र, उरई
2	राजस्थान (उत्तर-पश्चिम में)	मुरैना, शिवपुरी, गुना, आगर-मालवा, राजगढ, नीमच, मंदसौर, रतलाम,	बाँसवाडा, चित्तौडगढ, बारां, झालावाड, धौलपुर, कोटा,
		झाबुआ, श्योपुर (10)	सवाई माधोपुर
3	महाराष्ट्र (दक्षिण में)	खरगौन, बडवानी, बैतूल, खण्डवा, छिंदवाडा, सिवनी, बालाघाट, अलीराजपुर, बुरहानपुर (9)	धुले, भुसावल, अमरावती, नागपुर, भण्डारा
4	छत्तीसगढ (दक्षिण-पूर्व में)	सीधी, शहडोल, बालाघाट, मंडला, डिंडोरी, अनूपपुर, सिंगरौली (7)	सरगुजा, बिलासपुर, दुर्ग
5	गुजरात (पश्चिम में)	झाबुआ, अलीराजपुर (2)	वडोदरा

- क्षेत्रफलः- 3,08, 252 वर्ग किमी.
- विस्तारः- पूर्व से पश्चिम- 870 किमी. एवं उत्तर से दक्षिण - 605 किमी.
- राजधानीः- भोपाल
- मुख्य भाषाः- हिन्दी
- कुल जनसंख्याः- 7,26,26,809
- पुरूषः- 3,76,12,306
- महिलाः- 3,50,14,503
- जनसंख्या वृद्धि दरः- 20.30% (दशकीय)
- जनसंख्या घनत्वः- 236 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी.
- लिंगानुपातः- 931 (प्रति हजार)
- साक्षरता :- 69.3%
- अनुसूचित जनजातियों की कुल जनसंख्याः- 1,53,16,784
  - पुरूषः- 77,19,404
  - महिला :- 75,97,380
- कुल जनसंख्या में अनुसूचित जनजातियों का प्रतिशतः- 21.09 प्रतिशत
- अनुसूचित जातियों की कुल जनसंख्या :-1,13,42,320
  - पुरूष :- 59,08,638
  - महिला :- 54,33,682
- कुल जनसंख्या में अनुसूचित जनजातियों का प्रतिशतः- 15.6 प्रतिशत
- कार्य सहभागिता दर 43.5%
- कुल संभावः- 10
- कुल जिले :- 52
- कुल नगरः- 394

- ग्राम पंचायत :- 23006
- कुल नगर निगमः- 16
- कुल नगर पालिकाएंः- 99
- कुल नगर पंचायतः- 293
- जनपद पंचायतः- 313
- जनपद पंचायत सदस्यः- 6816
- जिला पंचायतः- 52
- कुल ग्रामः- 55,393
- आबाद ग्रामः- 54,903
- सबसे छोटी तहसील (जनसंख्या):- सैनी (भिण्ड)
- सबसे बडी तहसील (जनसंख्या):- इन्दौर
- सबसे बडी तहसील (क्षेत्रफल):- मण्डला
- सबसे छोटी तहसील (क्षेत्रफल):- अजयगढ (पन्ना)
- सबसे बडा जिला (जनसंख्या):- इन्दौर
- सबसे छोटा जिला (जनसंख्या):- निवाडी
- सबसे बडा संभाग (क्षेत्रफल):- जबलपुर
- सबसे छोटा संभाग (क्षेत्रफल):- शहडोल
- सबसे घनी आबादी वाली तहसीलः- इन्दौर
- सबसे बडा नगर :- इन्दौर
- सबसे घनी आबादी वाला जिलाः- भोपाल (854)
- सबसे बडा जिला (क्षेत्रफल):- छिन्दवाडा
- सबसे छोटा जिला (क्षेत्रफल):- निवाडी
- राजभाषा :- हिन्दी
- अन्य भाषायें :- उर्दू एवं अन्य क्षेत्रीय भाषायें
- प्रमुख धर्म :- हिन्दू
- उच्च न्यायालय :- जबलपुर (इन्दौर व ग्वालियर में खण्डपीठ)
- राजकीय पशु :- बारहसिंगा
- राजकीय वृक्ष :- बरगद
- राजकीय पक्षी :- दूधराज
- राजकीय पुष्प :- सफेद लिली
- राजकीय खेल :- मलखम्ब
- राजकीय मछली :- महाशीर

• मानवाधिकार आयोग गठित करने तथा मानव विकास रिपोर्ट पेश करने के मामले में देश में मध्यप्रदेश राज्य का क्रम स्थान	प्रथम
• राज्य के प्रत्येक जिले में उद्योग स्थापित करने के मामले में मध्यप्रदेश का स्थान	दूसरा (प्रथम पश्चिम बंगाल)
• विशेष क्षेत्र प्राधिकरण स्थापित करने के मामले में देश में राज्य का स्थान	प्रथम
• जिला सरकार की अवधारणा अपनाने के मामलें में राज्य का स्थान	प्रथम
• ग्राम स्वराज व्यवस्था लागू करने के मामले में राज्य का क्रम स्थान	प्रथम
• 20 सूत्री कार्यक्रम लागू करने के मामले में राज्य का क्रम स्थान	प्रथम
• 73 वें संविधान संशोधन के तहत वर्ष 1993 में पंचायती राज लागू करने के मामले में राज्य का स्थान	प्रथम
• पंचायत चुनावों में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण देने के मामले में देश में राज्य का स्थान	प्रथम
• हिन्दी भाषा में गजेटियर प्रकाशित करने वाला देश का राज्य	प्रथम
• हीरे के उत्पादन में मध्यप्रदेश का स्थान	प्रथम
• मैंगनीज उत्पादन में मध्यप्रदेश का स्थान	दूसरा
• ताँबा के उत्पादन में मध्यप्रदेश का स्थान	प्रथम

• देश की सबसे बडी मस्जिद प्रांगण	ताजुल मस्जिद (भोपाल)
• भारत का प्रथम ऑप्टिकल फाइबर कारखाना लगभग 200 करोड रूपए की अनुमानित लागत से राज्य के जिस स्थल पर 'नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ डिजाइन' की स्थापना की जानी है, वह है।	मण्डीदीप (रायसेन)
• अंतर्राष्ट्रीय बोरलॉग कृषि शोध (रिसर्च) संस्थान की स्थापना की जा रही है।	जबलपुर
• राज्य के 52 जिला पंचायतों के अध्यक्षों के लिए सम्पन्न आरक्षण कार्यवाही महिलाओं के लिए निर्धारित किए गए आरक्षित स्थान हैं ।	25
• अक्टूबर 2004 तक देश में	प्रथम
• राज्य का प्रथम पर्यटन केन्द्र	शिवपुरी
• भारत का प्रथम रत्न परिष्करण केन्द्र	जबलपुर में
• देश का प्रथम 'आपदा प्रबन्धन संस्थान'	भोपाल में
• सूती वस्त्र के उत्पादन मे राज्य का क्रम स्थान	तीसरा (महाराष्ट्र व गुजरात क्रमशः प्रथम द्वितीय)
• देश में प्रथम आदिवासी शोध संचार केन्द्र	झाबुआ
• राज्य निर्वाचन आयोग का गठन हुआ	15 फरवरी 1994 को
• भारत-भवन स्थित है	भोपाल
• राज्य में पाया जाने वाला सर्वाधिक वन वृक्ष	सागौन (17.8 प्रतिशत)

• राज्य का सबसे बडा रेलवे जंक्शन	इटारसी (होशंगाबाद)
• राज्य का सबसे लम्बा पुलः-	महानदी पुल (तवा नदी पर होशंगाबाद के नजदीक 1322.56मीटर)
• देश का प्रथम सौर चालित टेलीफोन एक्सचेन्ज	आयोलपाटा (शिवपुरी)
• देश का प्रथम राष्ट्रीय युवा महोत्सव का स्थल है।	भोपाल (जनवरी 1995)
• राज्य में सर्वप्रथम नगरपालिका स्थापित हुई	दातिया में (1907 में)
• भोपाल गैस काण्ड घटित हुआ	2 दिसम्बर की रात, 1984
• भारत का जिब्राल्टर उपनाम है।	ग्वालियर किले का
• राज्य में राष्ट्रपति शासन लगाया गया	3 बार
• राज्य की प्रथम किन्नर महापौर	कमला बुआ (सागर)
• राज्य में सर्वाधिक ताँबे की खान	बालाघाट में
• राज्य का प्रथम हाइवे एक्सप्रेस मार्ग	इन्दौर-भोपाल
• सतना का मझगवाँ संबंधित है	हीरे के खान से
• राज्य में सर्वाधिक प्रसार वाला समाचार पत्र	दैनिक भास्कर
• राज्य का पहला सैलरिच जैविक खाद्य संयन्त्र स्थापित है	भोपाल में (कृषि उद्योग विकास निगम)
• रिलायन्स समूह द्वारा अल्ट्रा मेगा प्रोजेक्ट राज्य के जिस जिले में स्थापित की जानी है, वह है	(सॉसन) सिंगरौली

• राज्य का सबसे बडा शक्कर कारखाना बरलाई	सीहोर
• सहकारी क्षेत्र का सबसे बडा शक्कर कारखाना	बरलई
• राज्य का एकमात्र वेधशाला स्थल	इन्दौर में
• एशिया की सबसे बडी भूमिगत मैंगनीज खदान स्थित है	भर्वेली (बालाघाट)
• देश का एकमात्र विकलांग पुनर्वास केन्द्र	जबलपुर
• राज्य का एकमात्र सैनिक अड्डा	महाराजपुर (ग्वालियर)
• राज्य की सबसे बडी जनजाति	भील
• देश का पहला सोयाबीन वायदा बाजार	इन्दौर में
• राज्य की ऊर्जा राजधानी	बैढन (सिंगरौली)
• देश में सर्वाधिक फेल्सपार पाया जाने वाला राज्य का जिला	जबलपुर
• राज्य में चन्देरी की साडियों का निर्मित करने वाला जिला	अशोकनगर
• राज्य सरकार द्वारा ललित कला क्षेत्र में दी जाने वाला जिला	अमृता शेरगिल फैलोशिप
• राज्य में 'झीलों का शहर' उपनाम से नामित जिला	भोपाल
• राज्य में बाबा शहाबुद्दीन औलिया के नाम पर उर्स आयोजित करने वाला जिला	नीमच
• मध्यप्रदेश की जनजाति को आदिवासी नाम से सुशोभित करने वाला व्यक्ति	ठक्कर बापा
• सबसे कम समय तक रहने वाले राज्य के मुख्यमंत्री	अर्जुन सिंह (11 मार्च 1985 से 12 मार्च 1985 मुख्यमंत्री एक दिन)

- शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से दो राज्य :- उज्जैन (महाकालेश्वर का प्रसिद्ध शिवमंदिर) के जिले में स्थित ओंकारेश्वर (ममलेश्वर ज्योतिर्लिंग शिव मंदिर) जिला खण्डवा
- राज्य का सर्वाधिक ठण्डा स्थल:- पचमढी
- यूरेनियम खनिज पाया जाने वाला राज्य का एकमात्र जिला :- शहडोल
- राज्य में बैंक नोट प्रेस है :- देवास में
- राज्य में न्यूज प्रिन्ट मिल है :- नेपानगर (बुरहानपुर)
- राज्य में सिक्योरिटी पेपर मिल है:- होशंगाबाद में
- राज्य में भारत की हैवी इलेक्ट्रिकल की औद्योगिक इकाई है :- भोपाल में
- राज्य में मानसिक चिकित्सा संस्थान है :- ग्वालियर एवं इन्दौर में
- राज्य में कैन्सर चिकित्सा संस्थान है :- ग्वालियर, इन्दौरी व जबलपुर में
- राज्य में अनुसूचित जातियों में सर्वाधिक संख्या है :- चमार (जाटव) की
- राज्य में गोण्ड जनजातियों का क्षेत्र है :- पूर्वी मध्यप्रदेश (नर्मदा तटीय क्षेत्र एवं सतपुडा वनीय अंचल)
- राज्य में पंचायती योजना की शुरूआत की गयी:- वर्ष 1976 में
- विश्वामित्र पुरस्कार दिया जाता है:- खेलों में प्रशिक्षकों को सराहनीय कार्य हेतु
- राज्य में प्रथम वायु फार्म स्थापित स्थल है:- जामगोदरानी गाँव जिला- देवास (26 जुलाई 1995)
- राज्य को नारू रोग से मुक्त राज्य घोषित किया गया:- **W.H.O** द्वारा वर्ष 1984 में
- राज्य की प्रथम किन्नर विधायक :- शबनम मौसी, (अनूपपुर जिला, क्षेत्र सोहागपुर, निर्दलीय)
- मध्यप्रदेश उत्सव का आयोजन होता है:- दिल्ली में
- राज्य में विधि संस्थान की स्थापना की गयी है:- भोपाल में
- राज्य का विधानसभा भवन जाना जाता है:- 'इंदिरा गाँधी विधानसभा' के नाम से

- सहरिया जनजाति के लोग मुख्यतः राज्य के जिन संभागों में पाये जाते हैं, वे हैः- चम्बल, ग्वालियर
- मध्यप्रदेश पुनर्गठन आयोग के अध्यक्ष थेः- फजल अली
- राज्य में निम्न पशुधन की संख्या सर्वाधिक हैः- गाय
- राज्य में अन्त्योदय योजना की शुरूआत की गयीः- ईटखेडी गाँव
- राज्य में अन्त्योदय योजना की शुरूआत की गयीः- ईटखेडी गाँव (भोपाल से)
- राज्य में अन्य वायु फार्म स्थापित होने प्रस्तावित हैः- धार व बैतूल में
- यू.एन.ओ. द्वारा वर्ष 1993 को घोषित किया गया थाः- आदिवासी व समीपवर्ती समूहों का वर्ष
- प्रदेश में एच.बी.जे गैस का आधारित पैट्रोकेमिकल्स कॉम्पलैक्स तथा नाइट्रोजन खाद संयंत्र स्थापित किया गया :- विजयनगर (गुना)
- राज्य के प्रमुख लोक नाट्य हैः- माच (मालवा), स्वांग (बुंदेलखण्ड), छाहूर (बघेलखण्ड), काठी (निमाड)
- 15–17 दिसम्बर, 1993 तक आदिवासी और समीपवर्ती समूहों का अंतर्राष्ट्रीय समारोह 'चरैवति' का आयोजन किया गया :- भोपाल स्थित इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव
- तरूण भादुडी पुरस्कार दिया जाता हैः- पत्रकारिता से
- नगरीय अपशिष्ट से बहु उपयोगी जैविक खाद बनाने का संयंत्र स्थापित किया गया हैः- ग्वालियर में
- राज्य में भोपाल स्थित रवीन्द्र भवन प्रसिद्ध हैः- एक विशाल सभागृह के लिए
- मध्यप्रदेश शासन प्रशिक्षण अकादमी का नया नाम हैः- आर.सी.वी. नरोन्हा प्रशासनिक, अकादमी भोपाल, मध्यप्रदेश
- संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (**UNDP**) की पहल पर राज्य में टेक्नालॉजी रिसोर्स सेन्टर की स्थापना केन्द्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा प्रथम चरण में जिन स्थलों पर की जा रही हैः- मनासा (नीमच), निवाडी (टीकमगढ), केसला (होशंगाबाद), तामिया (छिन्दवाडा) व सारंगपुर (राजगढ)
- पर्यटन को बढावा देने के लिए लंदन में विश्व पर्यटन मेले के दौरान वर्ल्ड टूरिज्म काउन्सिल के साथ समझौता करने के संबंध में देश में राज्य की स्थिति हैः- तृतीय
- जैन समुदाय को धार्मिक अल्पसंख्यक समुदाय घोषित करने के मामले में देश क राज्य की स्थिति :- प्रथम
- राज्य के जिस जिले मे इण्डिन इन्स्टीट्यूट ऑफ इन्फोरमेशन टेक्नोलॉजी एण्ड मैनेजमेन्ट है :- ग्वालियर
- राज्य के किस जिले में विश्व बैंक की सहायता से माइक्रा अर्थक्वेक रिकार्डर लगाया जा रहा हैः- खण्डवा में
- राज्य मे सर्वाधिक समय तक रहने वाले मुख्यमंत्री :- श्री शिवराजसिंह चौहान
- राज्य मे सर्वाधिक समय तक रहने वाले राज्यपाल :- श्री हरिविनायक पाटस्कर
- राज्य में सबसे कम समय तक रहने वाले राज्यपाल :- डॉ. वी. पट्टाभि सीतारमैया

मध्यप्रदेश के प्रसिद्ध नगर व स्थलों के उपनाम

नाम	उपनाम
जबलपुर	संगमरमर नगर
भेडाघाट (जिला जबलपुर)	संगमरमर की चट्टान
भिंड–मुरैना	बागियों का गढ
उज्जैन	मंदिरों, मूर्तियों का नगर
उज्जैन	महाकाल की नगरी
उज्जैन	मंगल ग्रह की जन्मभूमि
उज्जैन	पवित्र नगर
खजुराहो (जिला छतरपुर)	शिल्पकला का तीर्थ
भीम बैठका (जिला रायसेन)	शैल चित्रकला
साँची (जिला रायसेन)	बौद्ध जगत की पवित्र नगरी
इंदौर	मिनी मुम्बई
इंदौर	अहिल्या नगरी
इंदौर	कपडों का शहर
शिप्रा (जिला इंदौर)	मालवा की गंगा

शिवनी	मध्यप्रदेश का लखनऊ
बालाघाट	मैंगनीज नगरी
कटनी	चूना नगरी
मांडू (जिला धार)	आनंद नगरी (सिटी ऑफ जॉय)
मांडू (जिला धार)	महलों की नगरी
पीथमपुर (जिला धार)	भारत का डेट्राइट
मालवा	गेहूँ का भंडार
ग्वालियर	तानसेन की नगरी
मैहर	संगीत नगरी
चित्रकूट (जिला सतना)	श्रीराम तीर्थस्थली
ओरछा (जिला टीकमगढ)	अयोध्या नगरी
भोपाल	झीलों की नगरी
पचमढी (जिला होशंगाबाद)	पर्यटकों का स्वर्ग
ग्वालियर	पूर्व का जिब्राल्टर
बुरहानपुर	गैंडियों का स्वर्ग
खंडवा- खरगोन	सुनहरे जिले
बेतवा	मध्यप्रदेश की गंगा
रीवा	सफेद शेर की भूमि
धार	भोज नगरी

मध्यप्रदेश के नगरों के प्राचीन या पुराने नाम और नवीन (वर्तमान) नाम

प्राचीन या पुराने नाम	नवीन (वर्तमान) नाम
बुद्ध निवासिनी	बुधनी (जिला सीहोर)
भाबरा (झाबुआ)	चंद्रशेखर आजादनगर (जिला अलीराजपुर)
भोजताल	भोपाल
काकनाथ	साँची (जिला रायसेन)
धारा नगरी	धार
शादियाबाद	माण्डू (जिला धार)
माण्डवगढ	माण्डू (जिला धार)
माहिष्मति	महेश्वर (जिला धार)
श्रीपुरी	सिरपुर (जिला धार)
मल्हार नगरी	इंदौर
इंद्रपुर	इंदौर
महू	डॉ. भीमराव अंबेडकर नगर (जिला धार)
उज्जैनी	उज्जैन
अवन्तिका	उज्जैन
कुंतलपुर	कायथा (जिला उज्जैन)
कपिथ्य	कायथा (जिला उज्जैन)
दशपुर	मंदसौर
भेलसा/ बेस नगर	विदिशा
गोपाचल	ग्वालियर
वत्स	ग्वालियर (बुंदेलखण्ड क्षेत्र)
नलपुर	नरवर (जिला शिवपुरी)
जेजाकभुक्ति	बुन्देलखण्ड
त्रिपुरी	तेवर (जिला जबलपुर)
दिलीप नगर	दतिया
रिवा/भथा	श्रीवा
गढ मंडला	मंडला
खान देश	बुरहानपुर
पांचालगढ	पचमढी (जिला होशंगाबाद)
गोण्डवाना	मण्डला
खर्जुरवाहक	खजुराहो
एरिकिण	एरण (जिला सागर)
तुडीकर	दमोह क्षेत्र
शाहजहांपुर	शाजापुर
निजामत-ए-मशरीक	सीहोर
मुडवारा	कटनी

मध्यप्रदेश के नगर व राजधानी के नाम

नगर	राजधानी के नाम
भोपाल	मध्यप्रदेश की राजधानी
इंदौर	व्यावसायिक राजधानी
इंदौर	खेल राजधानी
जबलपुर	सांस्कृतिक राजधानी
पचमढी (जिला होशंगाबाद)	पर्यटन, राजधानी
पचमढी	ग्रीष्मकालीन राजधानी

(जिला होशंगाबाद)	
बालाघाट	मैंगनीज राजधानी
मैहर (जिला सतना)	संगीत राजधानी
सिंगरौली	ऊर्जा राजधानी

मध्यप्रदेश के प्रमुख शासकीय भवनों के नाम

भवन का नाम	कार्यालय/निवास स्थल
मिण्टो हॉल	राज्य का पुराना विधानसभा
इंदिरा गाँधी विधानसभा भवन	राज्य का नवीन विधानसभा भवन
वल्लभ भवन	राज्य सचिवालय
सतपुडा भवन	राज्य संचालनालय
शक्ति भवन	राज्य विद्युत मण्डल
ऊर्जा भवन	मध्यप्रदेश विद्युत नियामक आयोग
पर्यावास भवन	राज्य मानवाधिकार आयोग
पुस्तक भवन	मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम
निर्वाचन भवन	राज्य निर्वाचन भवन
श्यामला हिल्स	मुख्यमंत्री का निवास स्थल
राज्य आनंद संस्थान	शिवाजी नगर, भोपाल
मध्यप्रदेश लोकसेवा आयोग	रेसीडेंसी एरिया, इंदौर

भौगोलिक स्थिति

मध्यप्रदेश की धरातलीय तथा भू-वैज्ञानिक संरचना

मध्यप्रदेश की भौतिक संरचना मुख्यतः पर्वतों के निर्माण की विभिन्न प्रक्रियाओं तथा पर्वतों के भ्रंशन के कारण निर्मित हुई है। वर्तमान में मध्यप्रदेश की धरातलीय संरचना का मुख्य आधार आद्य महाकल्प, आर्यग्रुप, क्रिटेशस कल्प तथा तृतीय कल्प समूह को माना जाता है। इनका परिचय निम्नानुसार दिया जा सकता है-

1. आद्य महाकल्प – आद्य महाकल्प युग की चट्टानें पृथ्वी की प्रथम कठोर चट्टानें मानी जाती हैं तथा प्रदेश की धरातलीय संरचना का प्रमुख आधार इन्हें ही माना गया है। इस चट्टानों की बनावट में दो तथ्य जिम्मेदार हैं-

   (1) लावा के ठण्डा होने पर तथा इसका जल द्वारा चट्टान कणों के निक्षेपण से निर्मित जलज चट्टानों से मध्य प्रदेश का लगभग सम्पूर्ण भाग इन्हीं शैल समूहों पर आधारित है। पूर्वी मध्यप्रदेश के पश्चिम क्षेत्र में ये चट्टानें विंध्यन शैल तथा दक्कन ट्रैप से ढँकी हुई है। आद्य महाकल्पयुगीन चट्टानों में जीवाश्म या किसी प्रकार के जीव चिन्ह प्राप्त नहीं होते हैं।

   (2) बुन्देलखण्ड की गुलाबी ग्रेनाइट की चट्टानें दाब के परिवर्तन के कारण गुलाबी नीस में परिवर्तित हो गयी है यह पठार आद्य महाकल्प युग (आर्कियन) की ग्रेनाइट चट्टानें व नीस से निर्मित हैं । यह पूर्व की ओर सँकरी पेटी के रूप मे फैली है तथा दक्षिण में महाराष्ट्र तक चली गई है। लगातार ताप एवं दाब परिवर्तन के कारण वर्तमान में ये फाइलाइट शिष्ट तथा स्लेट के रूप में दिखाई पडती है। ये चट्टानें जीवाश्म रहित है। बालाघाट के मैंगनीज और जबलपुर का संगमरमर इन्हीं धारवाड शैल समूह के नाम से जाना जाता है। यहाँ पर इन चट्टानों के ऊपर मोटी धारवाड शैल समूह से जबलपुर में खाकाट क्रिस्टल, डोलोमाइट तथा संगमरमर प्राप्त होता है ।

2. पुराना संघ :- आद्य महाकल्प युग की समाप्ति के बाद जब फिर से पर्वत निर्माण प्रक्रिया प्रारम्भ हुई,

तब धारवाड शैल समूह कहीं-कहीं तो मोडदार पर्वतों के रूप में परिवर्तित हो गये, तो कहीं-कहीं कटकर समतल अवस्था में आ गये। इस अपरदन की प्रक्रिया में धारवाड समूह का स्थान लेने वाली चट्टानों को पुराना संघ की चट्टान कहा जाता है। इन्हें कई भागों में वर्गीकृत किया गया है।

3. कडप्पा शैल समूह-

छत्तीसगढ का निर्माण कडप्पा शैल समूह से ही हुआ है। कठोर तथा ठोस चट्टानां, स्लेट, क्वार्टजाइट, तथा चूने के पत्थर की परत कडप्पा चट्टानों पर ही जमा है। कडप्पा शैल के निचली सतह से लोहा तथा मैंगनीज की परत जुडी हुई है । इन चट्टानों के नीचले भाग में जीवाश्म नहीं है, पर ऊपरी भाग में चूने तथा कोयले के साथ जीवाश्म मिल जाते है। उत्तरी पश्चिमी मध्यप्रदेश के बिजावर समुद्र की चट्टानें कडप्पा समूह का उदाहरण है।

- इन चट्टानों में चूना पत्थर, बालू पत्थर, हेमेटाइट, क्वार्ट्ज तथा हीरे का भण्डार छिपा है। यह छतरपुर के बिजावर से प्रारम्भ होकर पूर्व मे पन्ना तक विस्तृत है तथा उत्तर पश्चिम में ग्वालियर तक फैले है पुराना समूह का दूसरा भाग विंध्यन शैल समूह है, जो नर्मदा नदी क उत्तर में जलज चट्टानों के रूप में समतल है ।

4. निचला विंध्यन शैल - इसके अन्तर्गत नर्मदा के उत्तर में रीवा से कोटा तक का क्षेत्र सम्मिलित है। इसके सोन घाटी क्षेत्र में चूना पत्थर तथा बालू पत्थर की सतह प्राप्त होती है। रीवा से सरगुजा, सीधी बेल्ट में ऊपर विंध्यन श्रेणी की चट्टानें है, जिन्हें कैमूर, रीवा तथा भाण्डेर श्रृंखला में बाँटा गया । इनमें छोटे-छोटे जन्तुओं तथा वनस्पतियों के अवशेष मिलते है । इमारती पत्थर बहुलता के साथ इस क्षेत्र में पाये जाते है ।

मध्य प्रदेश के प्रमुख पर्वत

भारत का हृदय मध्यप्रदेश दक्षिण के पठार का भाग है तथा इसका निर्माण पठार तथा नदी घाटियाँ में हुआ है । अतः यहाँ सभी हिस्सों में पर्वतीय संरचनाएँ विद्यमान है। इसका अधिकांश भाग पठारी है। फिर भी अनेक पर्वत प्रदेशों को सुशोभित करते है, जिनका निर्माण धारवाड शैल का समूह या गोडवाना शैल समूह, कडप्पा शैल समूह, विंध्यन शैल समूह तथा दक्कन ट्रैप के क्रमिक रूप के अपरदन से हुआ है। प्रदेश की प्रमुख पर्वत श्रृंखलाएँ निम्नलिखित है-

1. विंध्याचल पर्वत :- यह प्रदेश की सर्वाधिक प्राचीन पर्वत श्रृंखला है। इसकी समुद्र तल से ऊँचाई 450 से 600 मीटर तक है। इस पर्वत श्रृंखला का निर्माण सिलिका, सैंट, क्वार्ट्ज तथा लाल बलुआ पत्थर में क्षिप्रा नदी का तथा जानापाव पहाडी से चम्बल नदी का उद्गम स्थल है। इस भाग में माण्डू, जानापाव तथा वांचू प्वाइंट दर्शनीय स्थल है। विंध्याचल के पूर्वी भाग में भाण्डेर तथा कैमूर की पहाडियाँ है । उत्तर पूर्वी मध्यप्रदेश में तो विंध्याचल को भाण्डेर पहाडी कहा जाता है। ये भाग नर्मदा, सोन तथा केन नदी का उद्गम स्थल है। विंध्याचल के मध्य भाग में विदिशा की उदयगिरी पहाडियाँ तथा भोपाल के पास भीम बैठिका की पहाडियाँ है।

2. राजपीपला पर्वत श्रेणी :- यह पश्चिमी भाग से प्रारम्भ होकर पूर्व में बुरहानपुर दर्रे तक जाती है। राजपीपला की पहाडियाँ, अखरानी पहाडियाँ, बडवानी पहाडियाँ, बीजागढ तथा असीरगढ की पहाडियाँ इसी भाग में है। राजपीपला की पहाडियों को नर्मदा और ताप्ती की सहायकत नदियां ने काटा है।

3. सतपुडा पर्वत :- सतपुडा पर्वत नर्मदा नदी के दक्षिण मे विंध्याचल पर्वत के समान्तर है। यह पूर्व में अमरकंटक तथा बालाघाट से प्रारम्भ होकर गुजरात के राजपीपला तक विस्तृत है। पूर्व में अमरकंटक की पहाडियाँ सर्वाधिक आकर्षित भाग है, जो महादेव पर्वत का भाग मानी जाती है। यहीं धूपगढ की चोटी 1350 मी. ऊँची स्थित है। यह सामान्यतः 600 से 1000 मी. ऊँचाई तक है। इसका निर्माण ग्रेनाइट और बेसाल्ट चट्टानां से हुआ है।

4. मैकाल पर्वत श्रेणी :- सतपुडा श्रेणी का पूर्वी भाग मैकल पठार कहलाता है। इसकी पूर्वी सीमा अर्द्धचंद्राकार है। इसकी सबसे ऊँची चोटी 1124 मी. है, अमरकंटक का पहाडी है।

5. अमरकंटक पर्वत :- अमरकंटक पर्वत सतपुडा का एक अंग है, जो पूर्व की ओर छोटा नागपुर के पठार तक फैला है।

6. अरावली पर्वत :- अरावली पर्वत श्रृखला दिल्ली, राजस्थान तथा गुजरात की प्रमुख पर्वत श्रृंखला है, परन्तु इसकी स्थिति मालवा के पठार के उत्तरी भाग में दिखाई पडती है। यह विश्व की सर्वाधिक प्राचीन पर्वत श्रृंखला है। स्पष्ट है कि राज्य के भू-भाग में अनेक पर्वत श्रृंखलाएँ है, लेकिन दक्षिणी भाग में अधिक है, जिनमें कई दर्रे और सघन वन विद्यमान है।

मध्यप्रदेश की पठारीय संरचना

- मालवा का पठार के मध्य से होकर कर्क रेखा गुजरती है। इसके अन्तर्गत मध्यप्रदेश के 18 जिलों के पूर्ण या आंशिक क्षेत्र सम्मिलित है । इसमें मंदसौर, रतलाम, धार, झाबुआ, अलीराजपुर, इंदौर, देवास, शाजापुर, राजगढ, सीहोर, भोपाल, विदिशा, रायसेन, सागर तथा गुना आदि है ।
- मालवा का पठार दक्कन ट्रेप के बेसाल्ट चट्टानों से निर्मित है जहाँ काली मिट्टी पायी जाती है। इस प्रदेश की सबसे ऊँची चोटी महू के दक्षिण में स्थित सिगार की चोटी (881 मीटर) है। अन्य चोटियाँ जानापाव (854 मीटर) तथा धजरी (810 मीटर) है। इस पठार में अनेक नदियाँ प्रवाहित होती है, जिसमें पश्चिम से पूर्व में माही, चम्बल, गम्भीर, क्षिप्रा, कालीसिंध, सिंध, पार्वती, धासान, सोनार, बेतवा आदि है।
- मालवा के पठार की जलवायु साधारणतया नम है। यहाँ ग्रीष्म ऋतु में न अधिक गर्मी पडती है और न ही शीत ऋतु में अधिक ठण्डी पडती है, अतः इस क्षेत्र की जलवायु समशीतोष्ण है। ग्रीष्मकालीन औसत तापमान 40° से 42.5°C रहता है। विदिशा जिले का गंजबसौदा सर्वाधिक तापमान वाला क्षेत्र है। वर्षा का वितरण असमान है। पश्चिमी भाग में औसतन 75 सेमी. वर्षा होती है, जबकि पूर्व की ओर वर्षा की स्थिति 75 से.मी. से 125 से.मी होती है। वर्षा का कारण अरब सागरीय दक्षिण पश्चिम मानसून है।
- विंध्याचल पर्वत श्रृंखला के अन्तर्गत जानापाव, माण्डू तथा काकरीबाडी प्रमुख पर्वत श्रृंखलाएँ है । कालीमिट्टी वाले इस क्षेत्र की प्रमुख फसलें सोयाबीन, कपास, गेहूँ, ज्वार, मूंगफली आदि है । प्रदेश का पश्चिमी भाग पूर्णतः वनविहीन हो चुका है, जबकि पूर्वी भाग में सागौन, साल तेंदूपत्ता प्रमुख वनोपज है । खनिजों का इस क्षेत्र में लगभग अभाव है ।
- मालवा के पठार में जनसंख्या अधिक पश्चिमी मालवा का पठार राज्य का प्रमुख औद्योगिकी क्षेत्र है। यहाँ कृषि पर आधारित उद्योगों तथा उपभोक्ता सामग्री संबंधी उद्योग की प्रमुखता है। नागदा में कृत्रिम रेशे का इंदौर में सूती एवं ऊनी वस्त्रों के कारखाने तथा इलेक्ट्रॉनिक कॉम्प्लेक्स, स्पोर्ट कॉम्प्लेक्स, सागर में स्टेनलैस स्टील कॉम्प्लैक्स, देवास में लेदर कॉम्प्लेक्स आदि कारखाने है । इसी पठार में भारत का डेट्राइट धार जिले का पीथमपुर है। यद्यपि पूर्वी मालवा में औद्योगीकरण अपेक्षाकृत कम हुआ है। मालवा में यातायात के साधनों की प्रचुरता है ।

मध्यभारत का पठार

- मध्यभारत का पठार चम्बल के उपादि प्रदेश के नाम से विख्यात है। यह पठार दक्षिण में मालवा का पठार पश्चिम में राजस्थान की उच्च भूमि, उत्तर में यमुना का मैदान तथा पूर्व में बुन्देलखण्ड की पठारी भूमि से घिरा है। इसके अंतर्गत मुरैना, भिण्ड, ग्वालियर, शिवपुरी गुना, अशोकनगर, नीमच, मन्दसौर जिले की भानपुरा तहसील आदि पूर्ण या आंशिक रूप से आती है। इस प्रकार मध्य भारत का पठार मध्यप्रदेश के भौगोलिक क्षेत्र का 10.7 प्रतिशत (32,896 वर्ग किमी.) है।
- इस पठार का निर्माण विंध्यन शैल समूह के अपरदन से तथा चम्बल नदी द्वारा लाई गई मिट्टी से हुआ है। अतः इस क्षेत्र की प्रमुख मिट्टी जलोढ मिट्टी है। जलवायु की दृष्टि से यह अत्यधिक गर्म तथा ठण्डा प्रदेश है। औसत वर्षा 55 से.मी. से 75 से. मी. होती है। इस प्रदेश में प्रवाहित होने वाली नदियाँ क्षेत्र के सामान्य ढाल का अनुसरण करती हुई उत्तर व उत्तर-पूर्व की ओर प्रवाहित होती है। इस पठार में चम्बल, सिंध, क्वारी, पार्वती, कुनू आदि नदियाँ प्रवाहित होती है ।
- यह पठार लगभग वनविहीन है। यहाँ शुष्क व कँटीले वन जैसे खैर, बबूल और करौंदे की प्रमुखता है। खनिज सम्पदा की दृष्टि से इस पठार में चीनी मिट्टी, चूना पत्थर तथा संगमरमर प्रमुख है । औद्योगिक विकास इस पठार में द्रुतगति से हो रहा है। भिण्ड जिले का मालनपुर, मुरैना का बामौर तथा

ग्वालियर प्रमुख औद्योगिक केन्द्र हैं। कैलारस एवं डबरा चीनी मिल्स के लिए, शिवपुरी व बमौर कत्था उद्योग के लिए, ग्वालियर बिस्कुट, कृत्रिम रेशे,चीनी मिट्टी तथा चमडा उद्योग के लिए प्रसिद्ध है।

- ग्वालियर, शिवपुरी इस पठार के प्रमुख दर्शनीय स्थल है। शिवपुरी का माधव राष्ट्रीय उद्यान वनीय सघनता के लिये विख्यात है। इसके अतिरिक्त घाटीगाँव, करेरा व चम्बल अभयारण्य भी दर्शनीय स्थल है। यहाँ सहरिया जनजात पाई जाती है। रासलीला तथा रामलीला इस क्षेत्र के प्रमुख मनोरंजन के साधन है।

बुन्देलखण्ड का पठार

- मध्यभारत के पठार की पूर्व दिशा एवं बघेलखण्ड के पठार की उत्तरी दिशा में स्थित बुन्देलखण्ड का पठार स्थित है। इस पठार के प्रमुख जिलों में छतरपुर, पन्ना, टीकमगढ, दतिया, अशोकनगर, डबरा (ग्वालियर), लहार (भिण्ड), पिछोर एवं करेरा (शिवपुरी) भाग आते हैं। 23,733 वर्ग कि.मी. क्षेत्र पर फैला यह पठार नीस नाम प्राचीन चट्टानों से निर्मित है। नीस और ग्रेनाइट पर विकसित यह एक पुरातन अपरदन पृष्ठ है। इस प्रदेश की समुद्र तल से ऊँचाई उत्तर में 155 मीटर से लेकर दक्षिण में 400 मीटर तक है। इस प्रदेश की सबसे ऊँची चोटी सिद्धबाबा (1172 मीटर) है।
- इस प्रदेश में मुख्य फसल गेहूँ एवं सरसों है। बुन्देलखण्ड प्रदेश में सागौन के वृक्षों की अधिकता पायी जाती है। इसके अतिरिक्त सेंजा, तेंदू, आँवला, अमलतास, बबूल, महुआ, सेमल, खैर आदि वृक्ष पाये जाते हैं।
- इस पठार में सिंध एवं उसकी सहायक नदी पहूज, बेतवा और उसकी सहायक नदी धसान और केन प्रवाहित होती है। काली एवं लाल मिट्टी से निर्मित सीमित वर्षा वाले इस पठार में उर्वरता की कमी है, साथ ही पठारी क्षेत्रों के कारण कृषि अनुकूलता प्राप्त नहीं है। इस पठार क्षेत्र के कारण कृषि अनुकूलता प्राप्त नहीं है। इस पठार की जलवायु गर्मी में अधिक गर्म तथा ठण्डी में अधिक ठण्डी रहती है। वर्षा औसतन 75 से 103 से.मी. तक होती है। खनिज की दृष्टि से इस पठार का अधिक महत्व नहीं है। छतरपुर मे हीरा और ग्रेनाइट पाया जाता है। औद्योगिक विकास तो इस पठार का पर्याप्त रूप से नहीं हो पाया है, फिर भी छतरपुर, दतिया तथा टीकमगढ में सीमेंट एवं बीडी उद्योग के कारखाने हैं।
- सोनगिरी, खजुराहो तथा केन अभ्यारण (घडियाल के लिए प्रसिद्ध) इस पठारीय क्षेत्र के प्रमुख दर्शनीय स्थल है। बुन्देलखण्ड का पठार प्राचीन काल में नल-दमयन्ती से लेकर चन्देलों तक की राजनीतिक स्थली रहा है। मध्यकाल में यह क्षेत्र पर प्रसिद्ध बुन्देलों एवं राजपूतों का राज रहा।

बघेलखण्ड का पठार

- बघेलखण्ड का पठार सोन नदी के पूर्व में तथा सोन नदी घटी के दक्षिण का क्षेत्र कहलाता है। इस क्षेत्र के प्रमुख जिले सीधी, सिंगरौली, शहडोल, उमरिया, अनूपपुर है।
- इस विस्तृत प्रदेश में आद्य महाकाल्प तथा जुरैसिक काल के शैल समूह मिलते हैं। गोंडवाना शैल समूह विश्व की प्राचीनतम संरचना है। इस प्रदेश का लगभग 50 प्रतिशत भाग वनों से ढँका हुआ है जहाँ ऊष्ण कटिबंधीय पतझड वाले वन पाये जाते हैं। इस क्षेत्र में काली, लाल, पीली व पथरीली मिट्टी पाई जाती है। कर्क रेखा इस भू-प्रदेश के मध्य से होकर गुजरती है। सोन, हसदो, जोहिला, गोपद, बनास, रिहन्द इस क्षेत्र की प्रमुख नदियाँ हैं। चावल, अलसी व तिल इस क्षेत्र की प्रमुख फसल है। बघेलखण्ड के पठार में औसत वार्षिक वर्षा 75 से. मी. से 125 से.मी. तक होती है। जबकि तापमान ग्रीष्मकाल में 40°C से 42°C तक तथा शीतकाल में 12.5°C तक रहता है।
- बघेलखण्ड में वनीय सघनता पायी जाती है तथा साल, सागौन, बाँस, तेंदूपत्ता और कुसुम मिश्रित रूप से प्रमुख वन सम्पदा है। छोटा नागपुर का एक भाग होने से बघेलखण्ड के पठार में कई प्रकार के खनिज पाये जाते हैं। यहाँ शहडोल, उमरिया में कोयला और चूना पत्थर तथा सीधी में कोरण्डम प्रचुरता के साथ उपलब्ध है।
- बघेलखण्ड का औद्योगिक विकास पर्याप्त नहीं हो पाया है, फिर भी उमरिया लाख उद्योग के लिए, सिंगरौली कोयला आधारित केन्द्र के लिए प्रसिद्ध है। मध्यप्रदेश की ऊर्जा राजधानी बैढन (सिंगरौली) इसी पठार में है। उराँव, कवार, कोल, बिरहोर, बैगा, गोंड, पनिकाऐं

बघेलखण्ड की प्रमुख जनजाति है, जो बघेलखण्डी भाषा बोलते हैं।

- बघेलखण्ड का पठार 500 मीटर से अधिक ऊँचा-नीचा कटा-फटा प्रदेश है। यहाँ द्विभाजक है। बघेलखण्ड के पठार के मध्य में देवगढ का पठार है, जो छोटा नागपुर के पठार का हिस्सा है।

रीवा पन्ना का पठार

- बुन्देलखण्ड के पठार के दक्षिण-पूर्व में स्थित रीवा-पन्ना का पठार पूर्व में बघेलखण्ड का ही अंग था। इस प्रदेश में रीवा, सतना, पन्ना, दमोह तथा सागर जिले की रेहली तथा बन्डा तथा कटनी जिले की मुडवारा व बडबारा तहसीले सम्मिलित हैं। इसे विंध्यन कगार प्रदेश भी कहते हैं।
- रीवा-पन्ना पठार की जलवायु ग्रीष्म ऋतु में साधारण गर्म तथा शीत ऋतु में साधारण ठण्डी है। बाँस, तेन्दूपत्ता, सवई, घास, शीशम तथा खैर इस क्षेत्र की प्रमुख वनोपज है। चूना, पत्थर, हीरा, गेरू, सिलिका तथा सीमेंट इस क्षेत्र की प्रमुख खनिज उपज हैं। पन्ना व सतना में हीरा, रीवा तथा सतना में चूना-पत्थर, जिप्सम तथा सिलिका सेन्ड का भण्डार है।
- सतना तथा मेहर सीमेंट उद्योग के लिए तथा पन्ना जिला हीरा तराशी के लिए प्रमुख है। चित्रकूट एवं मेहर महाराजा मार्तण्ड सिंह व्हाइट टाइगर सफारी मुकुन्दपुर (सतना) क्षेत्र प्रमुख दर्शनीय स्थल है। रीवा में क्योटी, चचाई तथा बहुटी बेलौहन, पियावन पुरवा जलप्रपात हैं। रीवा का गोविन्दगढ सफेद शेर के लिए विख्यात है। यह सम्पूर्ण क्षेत्र ऐतिहासिक दृष्टिकोण से विंध्य प्रान्त के नाम से प्रसिद्ध है। सोन, बीहड, धसान, टोंस तथा केन इस क्षेत्र की प्रमुख नदियाँ है। बुन्देलखण्डी तथा बघेली इस क्षेत्र की प्रमुख बोलियाँ हैं।

सतपुडा मैकाल श्रेणी

सतपुडा मैकाल श्रेणी नर्मदा घाटी के दक्षिण में पूर्व से पश्चिम तक नर्मदा घाटी के समानान्तर स्थित है। यह श्रेणी राजपिपल्या श्रेणी से बडवानी की अखरानी श्रेणी तथा बालाघाट की मैकल श्रेणी तक है। पूर्वी सतपुडा श्रेणी की पंचमढी स्थित धूपगढ चोटी (1350 मीटर) इस श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी है। इस श्रेणी के मध्य तथा पश्चिम में काली मिट्टी तथा पूर्व में लाल-पीली मिट्टी पायी जाती है। इस क्षेत्र के पश्चिम में मक्का, ज्वार, कपास तथा लाल मिर्च एवं पूर्व मे धान प्रमुख कृषि है। सतपुडा मैकल श्रेणी घने जंगलों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ साल, सागौन, बाँस, तेंदूपत्ता प्रमुख वनोपज हैं। यह क्षेत्र वनोपज की दृष्टि से सम्पन्न है। यहाँ पर बालाघाट तथा छिंदवाडा में मैंगनीज, बालाघाट में ताँबा, बैतूल जिले में कोयला, चूना पत्थर तथा ग्रेफाइट नामक खनिज मिलते हैं।

इस क्षेत्र में जलवायु अधिक गर्म किन्तु साधारण ठण्डी है। पश्चिम क्षेत्र का ग्रीष्मकालीन औसत तापमान 40°C तथा शीतकालीन 12.5°C रहता है, जबकि पूर्वी भाग का ग्रीष्म कालीन औसत तापमान 30°C तथा शीतकालीन 18°C रहता है। यहाँ वर्षा पश्चिमी भाग में 62.5 से.मी. से 75 से.मी. तक तथा पूर्वी भाग में 125 से.मी. से 142.5 से.मी. से अधिक बढ जाती है।

इस श्रेणी की प्रमुख नदियाँ पेंच, बेनगंगा, ताप्ती, वर्धा आदि हैं। औद्योगिक क्षेत्र के अन्तर्गत बैतूल में एच.एम.टी का कारखाना, छिंदवाडा में स्याही तथा पेन्ट उद्योग तथा बालाघाट में ताँबा उत्खनन संयंत्र स्थापित है। पचमढी, असीरगढ, वाबनगजा इस क्षेत्र के प्रमुख दर्शनीय स्थल है। पेंच राष्ट्रीय उद्यान इस क्षेत्र का प्रमुख वन्य जीव संरक्षण केन्द्र है। इस श्रेणी के पूर्व में कोरकू तथा गोंड जनजाति पाई जाती है। जबलपुर एवं छिंदवाडा जिले में भारिया जनजाति पाई जाती है।

नर्मदा-सोन घाटी

नर्मदा-सोन घाटी मालवा तथा रीवा-पन्ना के पठार के दक्षिण तथा सतुपडा मैकल श्रेणी के दक्षिण में अवस्थित है। यह क्षेत्र कर्क रेखा के निकट है। इस घाटी के अन्तर्गत जबलपुर, मण्डला, नरसिंहपुर, होशंगाबाद, खण्डवा, खरगोन, बडवानी, देवास आदि जिलों के पूर्ण या आंशिक क्षेत्र आते है। यह घाटी पश्चिम में दक्कन ट्रेप युग के तथा पूर्व में विन्ध्यन क्रैटेशियम, कडप्पा, जुरासिक तथा धारवाड युग के शैल से निर्मित है। नर्मदा-सोन घाटी का पश्चिमी क्षेत्र गहरी काली मिट्टी के लिए तथा पूर्वी क्षेत्र लाल मिट्टी के लिए प्रसिद्ध है।

जलवायु की दृष्टि से यह गर्मियों में अत्यधिक गर्म तथा शीत में साधारण ठण्डा रहता है। परन्तु औसत तापमान

पश्चिम से पूर्व तक अलग-अलग प्राप्त होता है। पश्चिमी भाग अत्यधिक गर्म है, जबकि पूर्व भाग अपेक्षाकृत कम गर्म है। जबकि वर्ष की प्रमुख कृषि उपज कपास, मूँगफली, ज्वार, गेहूँ, सोयाबीन, चावल व अलसी है । इस नदी घाटी क्षेत्र में सागौन, तेंदूपत्ता, सागवान, बीजा तथा साल के वन पाये जाते है । इस क्षेत्र में नर्मदा, सोन तथा नर्मदा की सहायक तवा, वरना, हिरण, शक्कर, दूधी प्रमुख नदियाँ है ।

खनिज संसाधन की दृष्टि से यह क्षेत्र सम्पन्न है। इस क्षेत्र के प्रमुख खनिज चूना-पत्थर, चीनी मिट्टी, संगमरमर, मैंगनीज तथा कोयला है। इस क्षेत्र के अधिकांश उद्योग जैसे सीमेंट उद्योग, रबर उद्योग, दियासलाई उद्योग, चीनी मिट्टी उद्योग जबलपुर में केन्द्रित है। इस क्षेत्र के प्रमुख दर्शनीय स्थलों में अमरकंटक, भेडाघाट, नेमावर, महेश्वर, मण्डलेश्वर, ओंकारेश्वर है। इस क्षेत्र के पश्चिमी भाग में निमाडी तथा मालवी बोली तथा पूर्व की ओर बुन्देलखण्डी बोली प्रचलित है। यह क्षेत्र जनजातीय सघनता के लिए विख्यात है। यह पूरा क्षेत्र जायद फसलों के लिए विख्यात है।
यह कहा जा सकता है कि कृषि उपज की दृष्टि से नर्मदा-सोन घाटी मध्यप्रदेश का प्रमुख क्षेत्र है। साथ ही वनोपज एवं खनिज क्षेत्र में भी सम्पन्न है।

मध्य प्रदेश नदी तंत्र

मध्य प्रदेश एक कृषि प्रधान राज्य है । मध्य प्रदेश की अर्थव्यवस्था के विकास में नदियाँ प्रमुख भूमिका निभाती है । मध्य प्रदेश नदी तंत्र में नर्मदा, चम्बल, ताप्ती, सोन, बेतवा, कालीसिंध, पार्वती, क्षिप्रा इत्यादि नदियाँ शामिल है। यहाँ से बहने वाली नदियाँ गंगा नदी तंत्र में भी शामिल होती है तथा अरब सागर में भी मिलती है ।

नर्मदा नदी

इसे कुआरी नदी भी कहा जाता है। यह नदी मध्य प्रदेश तथा गुजरात में बहते हुए अरब सागर के खम्भात की खाडी में गिरती है तथा यह मुहाने पर ज्वारनद मुख का निर्माण करती है।

- किनारे बसे शहर जबलपुर, होशंगाबाद, ओंकारेश्वर व बुधनी आदि।
- प्रमुख बाँध - सरदार सरोवर, इन्दिरा सागर तथा ओंकारेश्वर प्रमुख बाँध है।
- प्रसिद्ध धार्मिक स्थल ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग इसी नदी के किनारे स्थित है।
- प्रमुख जलप्रपात - कपिल धारा (अनूपपुर), दूधधारा तथा धुआधार (जबलपुर के भेडाघाट) जलप्रपात आदि।

चम्बल

उत्तरी व पश्चिमी मध्यप्रदेश की सबसे बडी नदी चम्बल मालवा पठार में इन्दौर जिले के महू के पास विंध्याचल क्षेत्र स्थित जानापाव पहाडी के सिंगार चोटी से निकलती है। अपने उद्गम स्थल मे उत्तरमुखी होकर चम्बल नदी एक महाखण्ड बहते हुए उत्तर प्रदेश के इटावा जिले में यमुना नदी में मिल जाती है। इस नदी की कुल लम्बाई 965 किमी. है, जबकि मध्यप्रदेश में इसकी लम्बाई 700 किमी. है। यह नदी अपनी उत्खात भूमि (उबड-खाबड) वाली भू-आकृति के लिए प्रसिद्ध है। इसका पौराणिक नाम चर्मणवती या चर्मावती है। इस नदी पर चुलिया या पातालपानी जलप्रपात स्थित है। इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ है क्षिप्रा, कालीसिंध, पार्वती, कूनेज, कुंवारी और बनास । इस नदी पर चंबल परियोजना के अन्तर्गत गांधी सागर (मंदसौर), राणाप्रताप सागर (चितौडगढ) एवं जवाहर सागर (कोटा), बांध बनाए गए है । इस नदी के द्वारा अवनालिका अपरदन से बीहडों का निर्माण हुआ है।

मुख्य तथ्य

- यह मध्यप्रदेश के धार, उज्जैन, रतलाम और मंदसौर जिले से बहते हुए चौरासीगढ से राजस्थान में प्रवेश करती है ।
- इस नदी पर देष का एकमात्र नदी अभ्यारण "राष्ट्रीय चम्बल अभ्यारण (1978) है जो घडियाल के लिए प्रसिद्ध है भारत में सबसे ज्यादा घडियाल चम्बल नदी में पाये जाते है ।

सोन

इसे हिरण्य, शोण या सोनभद्र नदी भी कहा जाता है। इस नदी का उद्गम स्थल विंध्य पर्वतमाला में अमरकंटक के पठार में नर्मदा नदी के उद्गम स्थल के निकट सोनभुंग है। सोन नदी की लम्बाई 780 किमी. है। उत्तर-पूर्व दिशा में बहती हुई यह नदी मध्य प्रदेश को पार कर बिहार में पटना के निकट गंगा नदी में मिल जाती है। रिहन्द, गोपद, बनास तथा जोहिला सोन की

प्रमुख सहायक नदियाँ हैं। वर्षा ऋतु में इस नदी में आकस्मिक तथा विनाशकारी बाढ आती है। इस नदी पर बाणसागर परियोजना स्थित है, जो मध्य प्रदेश उत्तरप्रदेश तथा बिहार की संयुक्त परियोजना है। हर्ष के दरबारी कवि बाणभट्ट इस नदी के किनारे रहे हैं। इस नदी पर डेहरी ऑन सोन (बिहार) भारत का सबसे लम्बा रेलवे पुल नेहरू सेतु स्थित है ।

सोन नदी के रेत में सोना मिलने से इसका नाम सोन नदी पडा ।

ताप्ती

इसे सूर्यपुत्री भी कहा जाता है। मध्यप्रदेश की दूसरी सबसे बडी नदी का उद्गम स्थल मध्यप्रदेश के बैतूल जिले में मुल्ताई के निकट 762 मीटर की ऊँचाई पर है। इस नदी की लम्बाई 724 किमी. है तथा वार्षिक जल प्रवाह 86,340 लाख घन मीटर है। यह नदी नर्मदा नदी के समानान्तर पूर्व से पश्चिम दिशा में बहती हुई भैंसदेही की सीमा के निकट महाराष्ट्र मे प्रवेश करती है तथा गुजरात में खम्भात की खाडी मे गिरती है। ताप्ती के बाएँ तट की प्रमुख सहायक नदी पूर्णा है । इसके अतिरिक्त आनेर, गिरना, पंजारा, बाघुर, बोरी तथा मिंथोला भी इसकी सहायक नदियाँ है। भैंसदेही पठार पर ताप्ती के बीहड पाये जाते है। सतपुडा में इसने चट्टानी कंदराऐं भी बनाई गई है । इस नदी पर काकरापारा तथा उकाई परियोजना स्थित है । ब्रिटिश काल में इस नदी पर स्वाली बंदरगाह का निर्माण किया गया था। इस नदी पर पौराणिक कुण्ड (सूर्य, ताप्ती, शनि, धर्म, नारद, नागाबाबा एवं पाप) स्थित है। इस नदी के किनारे स्थित शहर बैतूल, बुरहानपुर, भुसावल, नेपानगर तथा सूरत है।

माही

इस नदी का उद्गम स्थल मध्यप्रदेश के धार जिले की सरदारपुर तहसील के समीप मिण्डा गांव की मेहद झील से हुआ है। माही नदी की कुल लम्बाई 520 किमी. है। यह नदी पश्चिम की ओर बहती हुई खम्बात की खाडी में गिरती है। माही एक ऐसी नदी है, जो कर्क रेखा को 2 बार काटती है। धार जिले में माही परियोजना तथा राजस्थान के बांसवाडा जिले में माही बजाज सागर परियोजना है ।

बेतवा

बेतवा नदी का प्राचीन नाम बेत्रवती है। मध्यप्रदेश की गंगा कही जाने वाली इस नदी का उद्गम स्थल विंध्याचल पर्वत श्रेणी में मध्यप्रदेश के रायसेन जिले में कमरा गांव नामक स्थान है। इसकी लम्बाई 480 किमी. है। बेतवा नदी मध्य प्रदेश के टीकमगढ जिले को पार करके उत्तर प्रदेश में हमीरपुर के निकट यमुना नदी में मिल जाती है। उत्तर-पूर्व दिशा में बहने वाली यह नदी मध्य प्रदेश व उत्तर प्रदेश की सीमा बनाती है। बेतवा-नदी की प्रमुख सहायक नदियां बीना, धसान तथा जामनी है। इस नदी पर माताटीला (रानी लक्ष्मी बाई) बांध बनाया गया है तथा सिंचाई हेतु हलाली तथा भाण्डेर नहर का निर्माण किया गया है। केन-बेतवा लिंक भारत की प्रथम नदी जोडो परियोजना के अन्तर्गत शामिल है, जबकि मध्यप्रदेश की ऐसी दूसरी परियोजना नर्मदा-शिप्रा लिंक परियोजना है । साँची, ओरछा, विदिशा शहर इसी के तट पर बने है ।

सिंध

मध्यप्रदेश के गुना जिले को 2 बराबर भागों में बांटने वाली यह नदी विदिशा जिले के सिरोज के निकट से निकलती है तथा उत्तर प्रदेश के इटावा के पास यमुना नदी में मिल जाती है। इसकी कुल लम्बाई 470 किमी. है। इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ है -पाहुज, कुंवारी तथा माहुर । सिंध नदी पर प्रदेश का सबसे लम्बा पुल बना है। मणिखेडा बांध इसी नदी पर है। दतिया शहर सिंध नदी के तट पर बसा है ।

केन

इस शुक्तिमति, कर्णवती व दिर्णावती के नाम से भी जाना जाता है। इसकी कुल लम्बाई 427 किमी. है। केन नदी का उद्गम स्थल विंध्याचल पर्वतमाला में कटनी के समीप कैमूर की पहाडी है। यह नदी उत्तर दिशा में बहती हुई यमुना नदी में मिल जाती है। इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ हैं- सोनार, बेवस, मीरहसन एवं उर्मिल ।

धसान

धसान बेतवा की सहायक नदी है, जो रायसेन जिले की बेगमगंज तहसील से निकलते हुए उत्तर पूर्व दिशा की ओर बहती है। इस नदी की कुल लम्बाई 365 किमी है, जिसमें से 240 किमी मध्यप्रदेश में बहती है। इस नदी पर हरपालपुर के पास लेंहचु बांध बनाया गया है।